न्यूज़ पेपर्स एसोसिएशन ऑफ इण्डिया

NEWSPAPERS ASSOCIATION OF INDIA

Volume XVIII वर्ष 18 | No. 04 अंक: 04 | March-2013 मार्च-2013 | Rs. 5/- per copy

2014 में बीजेपी को सपोर्ट करेंगे मुलायम?

विपुल कुमार

नई दिल्ली। समाजवादी पार्टी (एसपी) और भारतीय जनता पार्टी (बीजेपी) के बीच दूरियां कम होने लगी हैं? एसपी 2014 के लोकसभा चुनाव में बीजेपी को समर्थन देगी? यूपीए सरकार की नीतियों से तंग मुलायम सिंह किसी और राजनीतिक पार्टनर की तलाश में हैं?

अभी भले ही ये बातें महज कयास लगें, लेकिन एसपी चीफ मुलायम सिंह ने बुधवार को बीजेपी को जो सलाह दी उससे तो यही अंदाजा लगाया जा सकता है। मुलायम सिंह ने संसद में बीजेपी के नवनिर्वावित प्रेजिडेंट राजनाथ सिंह से मुसलमानों और मंदिर मस्जिद के प्रति पार्टी की सोच और विचारधारा बदलने के लिए पहल करने का सुझाव देते हुए कहा कि अगर ऐसा हुआ तब दोनों दलों के बीच दूरियां कम हो जाएंगी।

राजनाथ सिंह ने इसके जवाब में कहा कि हमारे और आपके बीच दूरी कहां है... अगली बार आप निश्चित तौर पर हमारे साथ होंगे।

प्रेजिडेंट के अभिभाषण पर धन्यवाद प्रस्ताव पर लोकसभा में चर्चा के दौरान मुलायम ने कहा, श्हम राजनाथ सिंह को उनके भाषण के लिए बधाई देते हैं क्योंकि उन्होंने इसमें समाजवादी विचारध ाारा का उल्लेख किया है। अब आप बीजेपी के प्रेजिडेंट है तब इन नीतियों को भी लागू करें और अपनी विचारधारा को बदलें। आप मुसलमानों के प्रति अपने विचार को बदलें, तब हमारे और आपके बीच दूरियां कम हो जाएंगी। अगर आपकी विचारधारा ठीक होती तो हमें कांग्रेस क्यों समर्थन देना पड़ता। मंदिर–मस्जिद के बारे में हमारी बीजेपी से काफी दूरी है। इस मामले में देश को एकजुट रखने के लिए उस समय हमारी सरकार को अयोध्या में गोली चलाने का आदेश देना पड़ा। क्या हमें यह अच्छा लगा? बिल्कुल नहीं।

मुलायम ने कहा कि देशभक्ति, सीमा सुरक्षा और भाषा के मामले में उनकी पार्टी और बीजेपी की एक नीति है।

इससे पहले, प्रेजिडेंट प्रणव मुखर्जी के अभिभाषण को मजबूरी में पढ़ा गया बयान करार देते हुए यूपीए सरकार को बाहर से समर्थन देने वाली समाजवादी पार्टी ने आरोप लगाया कि मनमोहन सिंह के नेतृत्व वाली केंद्र सरकार ने किसानों, मुसलमानों, देश की बाह्य और आंतरिक सुरक्षा, बेरोजगारी और गरीबों की स्थिति को सुधारने की दिशा में पहल नहीं की है। उन्होंने कहा, प्रधानमंत्रीजी आपको लंबा समय मिला है, आप अर्थशास्त्री हैं। ऐसे में देश की

सुरक्षा, गरीबों, किसानों, मुसलमानों के लिए कोई चमत्कारिक काम कर जाइए ताकि लोग आपको याद रखें।

मुलायम ने कहा कि पड़ोसी देशों के साथ तब तक हमारे रिश्ते अच्छे नहीं होंगे तब तक सीमा पर सुरक्षा कायम नहीं हो सकती है। इस दृष्टि से भारत, पाकिस्तान और बांग्लादेश के बीच महासंघ बनाए जाने की जरूरत है। उन्होंने कहा, भारत को अगर किसी से खतरा है तो वह है चीन। चीन पर किसी भी स्थिति में भरोसा नहीं किया जा सकता है। क्या सरकार कह सकती है कि हमारी सीमाएं सुरक्षित हैं?

दिवंगत पत्रकारों को किया गया याद, 10 फरवरी को मनाया गया 'पत्रकार श्रद्धांजलि दिवस'

भारत में सम्भवतः पहली बार ऐसा हुआ है कि पत्रकारों के लिए पत्रकारों द्वारा कोई श्रद्धांजलि सभा का आयोजन किया गया। परन्तु ऐसा पहली बार न्यूज पेपर्स एसोसिएशन ऑफ इंडिया के तत्वाध ाान में 10 फरवरी को किया गया। एसोसिएशन के संस्थापक डॉ. एम. आर गौड़ जी की दूसरी पुण्य तिथि पर नई दिल्ली के गाँधी शांति प्रतिष्ठान में देश कई गणमान्य पत्रकारों ने डॉ गौड़ को श्रद्धांजलि दी और उनके साथ पिछले दिनों दिवंगत कई पत्रकारों के व्यकित्व और कृतित्व को याद किया गया। इसकी पहल की थी एसोसिएशन के महासचिव विपिन गौड़ और शरीक हुए देश के कई जाने माने पत्रकार बंधू और बांधव। जिनमे वरिष्ठ पत्रकार सुनील डंग, कुमार राकेश, संजीव चौहान, प्रो दिलीप कुमार, कनाडा से आये रूबी बेदी, इन्दर बेदी आदि प्रमुख थे।

सैकड़ो पत्रकारों की मौजूदगी में इस दिवस को "पत्रकार श्रद्धांजलि दिवस" के तौर पर प्रति वर्ष मनाने का निर्णय किया गया। इस एक प्रस्ताव भारत सरकार और दिल्ली सरकार को भी सूचनार्थ भेजे जाने पर आम सहमति बनी।

इस सभा में पत्रकार स्वर्गीय सचिन विजय सिंह (निर्देशक जेल डायरी न्यूज एक्सप्रेस) स्वर्गीय रवि भारती (संवादाता आज तक), स्वर्गीय राघवेन्द्र मुद्गल (न्यूज एक्सप्रेस) स्वर्गीय कमल शर्मा (संवादाता आज तक) स्वर्गीय प्रदीप राय (जी न्यूज) व अन्य सभी उन दिवंगत पत्रकारों को भी याद किया गया, जिनके बारे में सभा को आजतक पूरा विवरण कई कारणों से नहीं मिल सका। दिवंगत पत्रकारों के परिवारवालों को शाल और सम्मान पत्र से सम्मानित किया गया।

इस सभा के दूसरे सत्र में "पत्रकारिता और लोकतंत्र में महिलाओ की भूमिका" विषय पर एक गोष्ठी का भी आयोजन किया गया। जिसमे मुख्य वक्ताओ के अलावा दिल्ली के कई मीडिया संस्थानों के विद्यार्थियों ने हिस्सा लिया और अपने अपने विचार रखे।

वरिष्ठ पत्रकार और डे आफ्टर समूह के प्रधान सम्पादक श्री सुनील डांग ने कहा कि भारत एक ऐसा देश है, जहाँ मीडिया की अलग पहचान है। देश मे कई स्वनामधन्य पत्रकार है जिन्होंने देश में पत्रकारिता मे एक बड़े पैमाने पर विशव के सामने रखा है, उन्हें मेरा शत शत नमन है. श्री डांग ने पत्रकारिता में महिलाओ के योगदान की भी सराहना की, जिन भारत को गर्व है। श्री डांग ने पत्रकारिता को समाज सेवा का सबसे बेहतर माध्यम बताया।

देश में राजनीति, संसद, प्रशासन सहित वैदेशिक मामलों पर गहरी पकड़ रखने वाले वरिष्ठ पत्रकार कुमार राकेश ने पत्रकारिता में सच की ताकत को विश्व की असीम ताकत बताया। उन्होंने कहा कि आज की पत्रकारिता पूर्व की तुलना में काफी बदल गयी लगती है, तथाकथित बाजारवाद के नाम पर सच्ची पत्रकारिता का गला घोंटा जा रहा है, उन्होंने कहा कि सच सदैव खरा है, पहले भी था, और भविष्य में भी रहेंगा। सच से बड़ा कोई नहीं।

श्री राकेश ने अपने युवा साथियों से अपील की वे इस पेशे को अन्य पेशो की तरह न लेकर समाज के सर्वांगीण विकास से जोड़कर देखे। उन्होंने कहा कि–आज समाज को कुछ स्वार्थपरक तत्वों ने जिस खतरनाक मोड़ पर खड़ा कर दिया है, वह चिंता की बात है। उसे उस दशा से बाहर निकालने के लिए हम सबको एक नए सिरे से बहुत काम करने की जरूरत है। उन्होंने कहा कि सच्चाई का कोई विकल्प नहीं हो सकता. महिला पत्रकारों के योगदान की चर्चा करते हुए श्री राकेश ने कहा कि देश में कई स्वनामधन्य महिला पत्रकारों ने राष्ट्र हित में सराहनीय कार्य किये है,जिनमे सुचेता दलाल, सीमा मुस्तफा, सरोज नागी, चित्रा सुब्रह्मण्यम, ओल्गा टेलिस जैसों के अप्रतिम योगदान को नहीं भुलाया जा सकता। अपराध पत्रकारिता को समाज से जोड़ कर उसे नई परिभाषा देने वाले वरिष्ठ पत्रकार संजीव चौहान ने कहा कि आज का मीडिया, मीडिया नहीं 'बाजार' बनता जा रहा है। पत्रकारिता उद्देश्यों से भटक रही है। कोई भी मीडिया हाउस अब मालिक उसमें झोंकी हुई रकम को मुनाफे के साथ वापस पाने के लिए 'मीडिया–हाउस' खोलता है। ऐसी पत्रकारिता जो मुनाफे के उद्देश्य से शुरु होती हो, उसका भविष्य क्या होगा, कहने की जरुरत नहीं है। सब कुछ हाल–फिलहाल सबके सामने है। श्री चौहान ने कहा कि अब पत्रकार और

पत्रकारिता की जरुरत मीडिया–हाउस को कम होने लगी है। उन्होंने आगे कहा कि पत्रकार वही है, जिसकी जेब में खबर है। बाकी सब पद व्यर्थ के हैं। पत्रकार और खबर ही एक दूसरे के पूरक होते हैं।

श्री चौहान के मुताबिक जरुरी नहीं है कि किसी चैनल का प्रमुख या फिर किसी अखबार का संपादक बहुत अच्छा पत्रकार भी हो। ये सब भी आज के बाजारवाद से साफ जाहिर है। मौजूदा मीडिया में आज तमाम ऐसे नाम हैं, जिन्हें अपनी की हुई शायद ही कोई ऐसी खबर याद हो, जिससे देश–समाज का भला हुआ हो। या उनकी खबर सुर्खियों में रही हो, लेकिन 'जुगाड़' के सहारे आज वे भी संपादक/चैनल हेड बने बैठे हैं।

जामिया मिलिया इस्लामिया विश्वविद्यालय में पत्रकारिता के प्रोफेसर डॉ दिलीप कुमार ने अपनी लोक प्रिय शैली में छात्रो को पत्रकारिता के कई गुर बताये और पत्रकारिता के सामाजिक योगदन पर भी प्रकाश डाला।

युवा पत्रकार और एसोसिएशन के महासचिव विपिन गौड़ ने युवाओ को देश की ताकत बताया, उन्होंने सभी साथियों से अपील कि महात्मा गाँधी की एकमात्र पसंदीदा पुस्तक "गीता" के आदर्शों को जीवन से जोड़कर देखे। गीता में बड़ी शक्ति है. क्योकि उस महान ग्रन्थ में कर्म को प्रधानता दी गयी है। कर्म ही जीवन है। श्री गौड़ ने ही इस महान दिवस को "पत्रकार श्रद्धांजलि दिवस" घोषित किये का प्रस्ताव किया, जिसे सभा ने में सर्वसम्मति से पारित कर दिया गया।

Spiritual Basis of Anupreksha

Kalpana Karala
[D.Y.N, N.D.D.Y,
M.A (SOL, PRIKSHA MEDITATION YOG), PRANIC HEALER]

One side of Preksha - Dhyan is - to watch, only watch. Watch without imposing any thought.

The second side of Preksha - dhyanis-to contemplate, to think. Contemplation is a great means to attain Truth. Thought is never wasted, it is only wasted when it is not concentrated on a single object. We can know truth only through thought. Many researches about great facts of life have been conducted through thought-dhyan (Vichar-dhyan). The process of thought is a very powerful process of knowing the truth. It is called "vichay-dhyan" according to Jain definition. It means thought oriented-dhyan, comtemplation oriented-dhyan, in which thought is more focused. Scattered and fragmented thoughts cannot become dhyan. When the thoughts become directed toward single direction, they become dhyan.

Thoughtlessness is also dhyan and thought is also dhyan. Both are dhyan-in the context of watching (darshan) there is thoughtless dhyan, in that case there is only watching, no thought. The thoughts flowing in a single direction become 'vichar-dhyan'.

In preksha-dhyan sadhna (devotion) method there is scope for both the dhyans. Preksha means- dhyan without thought. One only has to watch no to think. To watch whatever is happening in the body with a feeling on knower-seer.

The second side of preksha-dhyan is - anupreksha. Anupreksha means to think over what was seen during dhyan. We saw that there was were vibrations in certain parts of the body. The atoms were chayaapchya (metabolism). The basis of knowing is-preksha. Now we have to think, that where there is a coming and going of atoms and they are formed and distorted in the body, there matter cannot be permanent, it also menas that the body is 'anity-dharma' (transitory nature). Thinking and reflecting about this momentary nature is -anupreksha. Preksha and anupreksha should be exercised simultaneiously. First watch and then think about is results, and contemplate/reflect. The aim of preksha-dhyan is to perceive the truth by practicing proper (samyak) way to see and to think.

Anupreksha is also used as a process of preksha-dhyan, to do away with false conception and false imaginations. Why has 'anu' been used before 'preksha'? Anupreksha is to watch the truth'not by your own perceptions/prejudices, samskars or imagination, but watching the reality. Anupreksha means-anupreksha of truth.

Anupreksha is one of the forms of five types of swadhyaya (self-study). These five swadhyayas are-to study, to be curious, to repeat, to recite religious/dharmik kathas/ anecdotes, and anupreksha. "Mantra jap" and contemplating on it is also swadhyaya.

1. Anity Anupreksha (anupreksha of transitoriness)-all this is about to be left sooner or later. It nature is devastation and destruction. It is subject to Metabolism (chaya upchaya). It is fleeting, not permanent and momentary. It has many states. Like the body, Anupreksha of other things can also be exercised.

2. Asharan Anupreksha (anupreksha of no refugee) no one family, weather or matter - can save. One must search the way of being saved within oneself.

3. Sansar Anupreksha (Anupreksha of World)- Living being is trapped between life and death. He is born to die. Sometimes he is born as an animal, and sometimes as a human being, this cycle of change is eternal.

4. Ekatva Anupreksha (Anupreksha of Lonliness) - man is born alone and would die alone. Knowledge and grief - these are all subjective.

5. Anyatva Anupreksha (Anupreksha of Difference) - enjoyment of material things and passion (Kam) are different from me and I am different from them. Matter is different form me and I am different from matter.

6. Ashouch Anupreksha (Anupreksha of Impurity) - this body is not pure. It perpetually secretes change (Vikar).

करें योग–भागें रोग

सर्वांगासन– योगशास्त्र में इस आसन का अपना महत्वपूर्ण स्थान है। इस आसन से शरीर के सभी अंगों को समान रूप–से व्यायाम मिल जाता है। यह एक सरल आसन है। पहले कोई तौलिया या चादर बिछाएं और उस पर चित्त लेट जायें। दोनों पैरों को घुटनों से मोड़ें बिना पुट्ठों

के साथ ऊपर की ओर उठाएं। अब दोनों हाथों को कमर के ऊपरी हिस्सों के पास टिकाकर, कमर और धड़ को सीधे ऊपर की ओर उठाएं। समूचे शरीर का भार स्कंध–प्रदेश के ढलान पर पड़ेगा। सिर और कंधे को छोड़कर पूरा शरीर उल्टी दिशा में आ जाना चाहिए, इस ढंग से शरीर ऊपर की ओर उठाना है। जैसा कि चित्र में दिखाया गया है, आपकी दोनों कोहनियां फर्श पर टिकी रहें। इस आसन में ठोड़ी को सीने के साथ अच्छी तरह दबाकर रखें।

इस आसन को करने से रक्ताभिसरण की दिशा बदलती है। इससे प्राणधारक जीवन्त अवयवों को पर्याप्त मात्रा में रक्त–प्रवाह प्राप्त हो जाता है और इससे चेतना व कार्यक्षमता प्राप्त होती है। नियमित रूप से सर्वांगासन करने वाले व्यक्ति के शरीर के समस्त अंग कार्यशील रहते हैं। न उसके दांत सड़ते हैं और न उसे बहरापन आता है। आंखें दीर्घकाल तक नीरोगी रहती हैं, क्योंकि न कभी चश्मे की आवश्कता पड़ती है और न मोतियाबिन्द ही आता है। इस आसन को करने वाले व्यक्ति को जन्दी बुढ़ापा नहीं आता है। सभी इन्द्रियां सम्पन्न और सक्रिय रहती हैं। नपुंसकता दूर होती है, स्त्रियों का काम ठंडापन जाता रहता है, बन्धत्व दूर होता है। यकृत, तिल्ली, प्लीहा, की विकृतियां दूर होती हैं, मधुमेह के रोग से मुक्ति मिल जाती है, अंडाशय और मूत्राशय की शिकायतें दूर हो जाती हैं। स्त्रियों के गर्भाशय–संबंधी सभी रोग दूर हो जाते हैं। थाइराइड और कंठग्रंथि पर इसका विशेष प्रभाव पड़ता है। यौन–शक्ति का आवेग दृढ़ होता है। बढ़ा हुआ पेट घट जाता है। दंत–रोग कभी नहीं होता। खांसी, दमा, सर्दी, जुकाम आदि फेफड़ों की तकलीफों में सर्वांगासन लाभप्रद है।

शवासन– योगशास्त्र में शवासन को अंतिम आसन माना गया है। सभी व्यायाम पूर्ण करने के बाद पूर्णाहुति के रूप में यह आशन विश्राम करने के लिए है। जहां दूसरे आसनों में शरीर को परिश्रमरत होना पड़ता है। वहीं शवासन द्वारा शरीर को आराम दिया जाता है, ताकि अन्य आसनों से उत्पन्न थकान दूर हो जाए। शवासन का अर्थ है मुर्दे की तरह शरीर को ढीला और निश्चेष्ट छोड़ देना। इस शिथिलीकरण से जहां एक ओर व्यायाम की थकावट दूर होती है, वहीं दूसरी ओर शरीर की पेशियों और स्नायुमंडल का तनाव दूर होता है। शिथिलीकरण के इस आसन में चूंकि शरीर से कोई हरकत नहीं की जाती, इसलिए शक्ति संचय होती है।

छाती की पेशियों को ढीला करने के लिए श्वांस–प्रश्वांस की गति बहुत धीमी कर दें, जैसी कि सामान्य नींद में हो जाती है। इसके साथ ही मन को भी ढीला और निस्पन्द करें। मन में कोई विचार न रखें। इतना सब करने पर आपके शरीर में काफी ढिलाई आ जाएगी। अब कल्पना कीजिए कि और अधिक ढिलाई की लहर आपके पैरों से चलनी प्रारंभ हो गयी है और धीर–धीरे टांगों, जांघों, उदर और छाती की ओर बढ़ती हुई आपके शरीर को शिथिल बनाकर पूरा आराम दे रही है।

पूर्णरूप से शवासन सिद्ध होने की पहचान यह होती है कि व्यक्ति अर्द्ध–निद्रित अवस्था में हो जाता है। प्रायः इस आसन में समय बहुत लम्बा मालूम देने लगता है। शक्ति–संचय के लिए शवासन उत्तम आसन है। शरीर में आया हुआ तनाव भी इससे दूर होता है। इसे पांच से दस मिनट तक किया जा सकता है।

शीर्षासन– हमारे भारतवर्ष में ऋषि–मुनियों और महानुभावों ने शीर्षासन के द्वारा सुदीर्घ आयु प्राप्त की थी। शीर्षासन केवल ऋषि–मुनियों के लिए ही नहीं, बल्कि सर्वसाधरण के लिए भी शक्ति का महास्त्रोत है। प्रत्यके व्यक्ति को अपने दैनिक व्यायामों में शीर्षासन का समावेश अवश्य करना चाहिए। योगासनों में शीर्षासन को आसनों का राजा कहा गया है। सब आसनों में यह सर्वश्रेष्ठ है।

मानव–शरीर में छोटे–बड़े 435 स्नायु हैं। इनका वजन शरीर के वजन का लगभग 46 प्रतिशत है। शीर्षासन करने से इन सभी स्नायुओं पर अच्छा प्रभाव पड़ता है। इस आसन से प्राणधारक अवयवों में रक्त प्रवाह का संचार होने से वे नई जीवन–शक्ति प्राप्त करते हैं। संक्षेप में शीर्षासन करने वाले व्यक्ति में जीवन–शक्ति की वृद्धि होती है और वह सदैव जवान रहता है। शीर्षासन प्रायः सभी कर सकते हैं यह आसन किसी भी स्थान में और किसी भी मौसम में बड़े आराम से किया जा सकता है। शीर्षासन करने से गुरुत्वाकर्षण की दिशा बदल जाती है। फलस्वरूप मस्तक के अवयवों–गरदन, जबड़े, आंख, कान, ठोड़ी एवं मुंह के अंगों को पर्याप्त मात्रा में रक्तप्रवाह प्राप्त होने से उन्हें नवजीवन प्राप्त होता है। समस्त शरीर में स्फूर्ति, ताजगी और स्वास्थ्य का सागर लहरा उठता है।

शीर्षासन प्रभावी व्यक्तित्व को विकसित करने में, मुख का तेज बढ़ाने में, गरदन के स्नायु और सीने को पुष्ट करने में सहायक होता है। पीलिया और पाण्डु रोग का शमन करता है। यकृत सशक्त बनता है और रक्त विकार से होने वाले चर्मरोग अपने आप नष्ट हो जाते हैं। स्मरण–शक्ति तीव्र और बुद्धि प्रखर होती है। पाचन–क्रिया को गति मिलती है। शीर्षासन करने वाले व्यक्ति की जठराग्नि सदा प्रदीप्त रहती है। पेट के भीतरी अंग यथास्थान आकर रोगमुक्त बनते हैं।

अम्ल पित्त, अल्सर, खट्टी डकारें, वायु–प्रकोप और अपच आदि पेट की तकलीफें शीर्षासन से दूर हो जाती हैं। हर्निया–रोग ठीक हो जाता है। थाइराइड ग्रंथि में प्राण–संचार होता है और उसे संकोच–विकास का श्रम मिलता है। रीढ़ (मेरुदण्ड) स्वस्थ होती है। छोटे कद वालों की ऊंचाई प्राकृतिक रूप–से बढ़ती है। कंठमाला, बहरापन, मसूड़ों में मवाद और दांतों में सड़न के रोक दूर हो जाते हैं। सिर के बालों का झड़ना अथवा सफेद होना रुक जाता है। आसन की विधि निम्न हैं–

फर्श पर कोई कम्बल, दरी या मोटी चादर बिछाएं। एक सूती धोती को लपेटकर ईंडुरी जैसी गोलाकार बना लें ताकि आपका सिर उस पर ठीक ढंग–से बैठ सके। अब कम्बल पर ईंडुरी को रखें। दोनों हाथों की उंगलियों को परस्पर फंसाकर सिर के पीछे रखें। सबसे पहले घुटनों के बल अधखड़ी स्थिति में बैठें। कोहनियों को फर्श पर रखकर सिर को ईंडुरी पर रखें। इसके बाद कमर का हिस्सा उठाकर धीरे–धीरे पैरों को उठाते हुए ऊपर की ओर एकदम ऊंचे ले जायें (शीर्षासन की सारी क्रियायें चित्र में प्रदर्शित की गयी हैं)। पैर सीधे रहने चाहिएं, वह घुटनों से मुड़ें नहीं, शीर्षासन में पूरे शरीर का वजन कोहनियों और उंगलियों के त्रिभुज पर तथा ईंडुरी पर टिके सिर के भाग पर पड़ता है। प्रारंभ में दीवार का सहारा लेकर शीर्षासन कर सकते हैं। यह आसन पांच से दस मिनट तक किया जा सका है। इसके पूरा हो जाने पर फिर अन्य किसी व्यायाम को नहीं करना चाहिए।

The Legned of Bhagat Singh

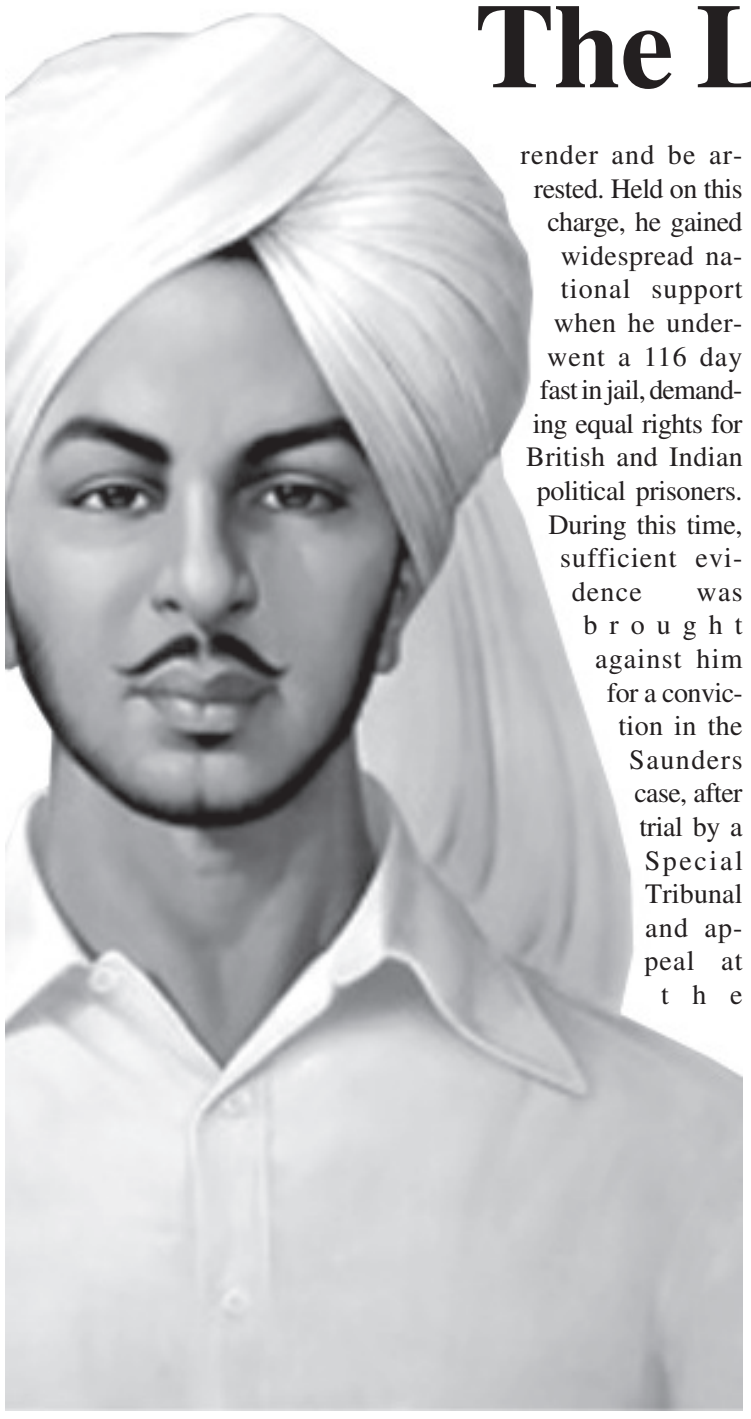

Bhagat Singh (28 September 1907 - 23 March 1931) was an Indian nationalist considered to be one of the most influential revolutionaries of the Indian independence movement. He is often referred to as Shaheed Bhagat Singh, the word "Shaheed" meaning "martyr" in a number of Indian languages. Born into a Sikh family which had earlier been involved in revolutionary activities against the British Raj, as a teenager Singh studied European revolutionary movements and was attracted to anarchistand marxist ideologies. He became involved in numerous revolutionary organisations, and quickly rose through the ranks of the Hindustan Republican Association (HRA) to become one of its main leaders, eventually changing its name to the Hindustan Socialist Republican Association (HSRA) in 1928.

Seeking revenge for the death of Lala Lajpat Rai at the hands of the police, Singh was involved in the assassination of British police officer John Saunders. He eluded efforts by the police to capture him. Together with Batukeshwar Dutt, he undertook a successful effort to throw two bombs and leaflets inside the Central Legislative Assembly while shouting slogans of Inquilab Zindabad. Subsequently they volunteered to surrender and be arrested. Held on this charge, he gained widespread national support when he underwent a 116 day fast in jail, demanding equal rights for British and Indian political prisoners. During this time, sufficient evidence was brought against him for a conviction in the Saunders case, after trial by a Special Tribunal and appeal at the Privy Council in England. He was convicted and subsequently hanged for his participation in the murder, aged 23. His legacy prompted youth in India to begin fighting for Indian independence and he continues to be a youth idol in modern India, as well as the inspiration for several films. He is commemorated with a large bronze statue in the Parliament of India, as well as a range of other memorials.

Early life

Bhagat Singh, a Sandhu Jat,[1] was born on 28 September 1907 to Kishan Singh and Vidyavati at Chak No. 105, GB, Banga village, Jaranwala Tehsil in the Lyallpur district of thePunjab Province of British India. His birth coincided with the release from jail of his father and two uncles, Ajit Singh and Swaran Singh.[2] His family were Sikhs, some of whom had been active in Indian independence movements, and others having served in Maharaja Ranjit Singh's army. His ancestral village was Khatkar Kalan, near the town of Banga inNawanshahr district (now renamed Shaheed Bhagat Singh Nagar) of Punjab.

His grandfather, Arjun Singh, was a follower of Swami Dayananda Saraswati's Hindu reformist movement, Arya Samaj, which had a considerable influence on the young Bhagat. His father and uncles were members of the Ghadar Party, led by Kartar Singh Sarabha and Har Dayal. Ajit Singh was forced to flee to Persia due to pending court cases against him, while Swaran Singh died at home in 1910 following his release from Borstal Jail in Lahore.

Unlike many Sikhs of his age, Singh did not attend the Khalsa High School in Lahore. His grandfather did not approve of the school officials' loyalism to the British authorities. Instead, he was enrolled in the Dayanand Anglo Vedic High School, an Arya Samaji institution.

In 1919, at the age of 12, Bhagat Singh visited the site of the Jallianwala Bagh massacre, where unarmed people gathered at a public meeting had been fired upon without warning a few days earlier, killing thousands. Bhagat Singh participated ardently in Mahatma Gandhi's Non-Cooperation Movement in 1920 and openly defied the British by following Gandhi's wishes of burning his government school books and any imported British clothing he could find. At the age of 14, he welcomed in his village, protestors against the Gurudwara Nankana Sahib firing of 20 February 1921 which killed a large number of unarmed protesters. Disillusioned with Gandhi's philosophy of non-violence, after Gandhi called off the non-cooperation movement, following the violent murders of policemen by villagers, which were a reaction to the police's killing of three villagers by firing at Chauri Chaura in the United Provinces in 1922, he joined the Young Revolutionary Movement. Henceforth, he began advocating the violent overthrow of the British in India.

In 1923, Singh joined the National College in Lahore, where he not only excelled academically but was also involved in extra-curricular activities such as the dramatics society. By this time, he was fluent in five languages. In 1923, Singh won an essay competition set by the Punjab Hindi Sahitya Sammelan. In his essay on Punjab's Language and Script, he quoted Punjabi literature and showed a deep understanding of the problems of afflicting Punjab. He founded the Indian nationalist youth organisation Naujawan Bharat Sabha (Hindi: "Youth Society of India") in March 1926. He also joined the Hindustan Republican Association, which had prominent leaders, such as Ram Prasad Bismil,Chandrashekhar Azad and Ashfaqulla Khan. The name of the organisation was changed toHindustan Socialist Republican Association at Singh's insistence. A year later, to avoid getting married by his family, Singh ran away from his house to Cawnpore. In a letter he left behind, he stated:

Assembly bomb case trial

Singh and Dutt were charged with attempt to murder, and the trial began on 7 May 1929. Doubts have been raised about the accuracy of testimony offered at the trial. One key discrepancy related to the automatic pistol that Singh had been carrying prior to his arrest. One witness, Sobha Singh, told the court that Singh had been firing the pistol two or three times before it jammed, and some policemen stated that Singh was pointing the gun when they arrived. Later Sobha Singh was knighted as a reward for his testimony. Sergeant Terry, who had confronted and arrested Singh, testified that the gun was pointed downward when he took it from Singh and that Singh "was playing with it." According to the India Law Journal, however, this was incorrect, as Singh had turned over the pistol himself. According to Kooner, Singh "committed one great blunder" by taking his pistol on that day "when it was clear not to harm anybody and offer for police arrest without any protest." Kooner further states that the police connected "the shell of the gun fire found from the (Saunders') murder site and the pistol." The two were sent to the Sessions Court of Judge Leonard Middleton, who ruled that Singh and Dutt's actions had undoubtedly been 'deliberate' as the bombs had shattered the one and a half-inch deep wooden floor in the Hall. Dutt was defended by Asaf Ali, while Singh defended himself. Their appeal was turned down and they were sentenced to 14 years life imprisonment

Hunger strike and Lahore conspiracy case

Singh was re-arrested for murdering Saunders and Chanan Singh based on substantial evidence against him, including the statements of his associates, Hans Raj Vohra and Jai Gopal. His life sentence in the Assembly Bomb case was deferred till the Saunders' case was decided. Singh was sent to the Mianwali jail from the Delhi jail, where he witnessed discrimination between European and Indian prisoners, and led other prisoners in a hunger strike to protest this illegal discrimination.

Popularity among people

In the words of Subhas Chandra Bose: "Bhagat Singh had become the symbol of the new awakening among the youths ...". Nehruacknowledged that the popularity of Singh was leading to a new national awakening, saying

"He was a clean fighter who faced his enemy in the open field ... he was like a spark that became a flame in a short time and spread from one end of the country to the other dispelling the prevailing darkness everywhere.

Four years after Singh's hanging, the Director of the Intelligence Bureau, Sir Horace Williamson, wrote:

"His photograph was on sale in every city and township and for a time rivalled in popularity even that of Mr. Gandhi himself

Controversy

Last wish

Randhir Singh, a Ghadar Party revolutionary convicted of the first Lahore Conspiracy Case claimed to have met Singh in Lahore Central Jail on 4 October 1930 during his release. Singh was condemned on 7 October 1930 contradicting his presence in condemned cells on 4 October. According to Randhir Singh, Singh mentioned to him, that he (Singh) had shaven "his hair and beard under pressing circumstances" and that "it was for the service of the country".He also said that Singh told him that his companions had "compelled him to give up the Sikh appearance", and that he was ashamed. He had expressed, as his last wish before being hanged, the desire to get amrit from Randhir Singh and to once again adorn the 5 Ks. However, this was not granted by the jail authorities. However Many scholars are sceptic about this meeting as, Randhir Singh being the only source of information about sudden change in Singh's point of view towards religion casts doubts, as Singh was a strong critic of religion. Furthermore, Singh wrote his essay Why I Am an Atheist before his execution; towards the end of which he wrote: Let us see how steadfast I am. One of my friends asked me to pray. When informed of my atheism, he said, "When your last days come, you will begin to believe." I said, "No, dear sir, Never shall it happen. I consider it to be an act of degradation and demoralisation. For such petty selfish motives, I shall never pray." Reader and friends, is it vanity? If it is, I stand for it

सम्पादकीय

विचार बदलने की जरूरत

भाजपा के राष्ट्रीय अध्यक्ष राजनाथ सिंह और समाजवादी पार्टी के मुखिया श्री मुलायम सिंह यादव ने गत 27 फरवरी को जो बात कही, वह समय की जरूरत है। उसी दिन राजधानी लखनऊ में एक कार्यक्रम के दौरान वरिष्ठ नेता और उत्तर प्रदेश व उत्तराखण्ड के मुख्यमंत्री रह चुके पंडित नारायण दत्त तिवारी ने भी उसी बात को एक संगोष्ठी में कहा था। इन लोगों का अभिप्राय है कि अब विचार बदलने की जरूरत है। मुझे याद आता है कि सन् 2009 के लोकसभा चुनाव में जब वामपंथी पार्टियों को शिकस्त मिली थी तब उनके भी नेताओं ने यह कहा था कि अब वामपंथ की नयी परिभाषा गढ़ने की जरूरत है। विशेष रूप से पूंजीपतियों का अंधा विरोध तो कतई चलने वाला नहीं है और उनके साथ जुड़कर ही शोषितों को ऊपर उठाया जा सकता है। इतना ही नहीं राजनीतिक और सामाजिक समस्याओं का अंत भी विचारों में बदलाव करके ही संभव है, कानून बनाने या संसाधन जुटाने से यह संभव नहीं है। भाजपा और सपा एक दूसरे की विरोधी पार्टियां मानी जाती हैं। सपा को जहां अल्पसंख्यकों का भरपूर समर्थन मिला हुआ है, वहीं भाजपा से वे परहेज करते हैं। हालांकि जनता पार्टी की सरकार में और फिर जनता दल के समय भी दोनों सत्तापक्ष में साथ–साथ खड़े थे। सपा ने मण्डल कमीशन की रिपोर्ट पर पिछड़ी जातियों को एकजुट करने के लिये आरक्षण का समर्थन किया तो भाजपा ने राम मंदिर आंदोलन खड़ा कर हिन्दुओं का ध्रुवीकरण कर दिया। मुसलमानों के साथ पहले यही काम कांग्रेस कर रही थी और संघ परिवार का भय दिखाकर अपने साथ जोड़े हुए थी। अब इस प्रकार के विचारों को छोड़ने की जरूरत है और अलगाव की जगह एकता की बात करनी होगी। श्री राजनाथ सिंह और श्री मुलायम सिंह यादव ने केन्द्र की राजनीति के स्तर पर साथ–साथ चलने की जब बात कही तो यही संकेत मिला कि विचारों में परिवर्तन की जरूरत वे भी महसूस कर रहे हैं। श्री मुलायम सिंह ने कहा कि भाजपा यदि मुसलमानों के बारे में अपनी नीति बदल ले तो दोनों दलों के बीच की दूरी कम हो सकती है। इसके जवाब में श्री राजनाथ सिंह ने कहा कि हमारे बीच कोई दूरी ही नहीं है और अगले लोकसभा चुनाव के बाद समाजवादी पार्टी भी हमारे साथ होगी। श्री मुलायम सिंह यादव ने भाजपा के देश भक्ति, सीमा और भाषाई मुद्दों से सहमति जताते हुए कहा कि भाजपा मुसलमानों और कश्मीर के बारे में जो सोच है, उसको बदल दे तो सपा और भाजपा की दूरी कम हो जाएगी। श्री मुलायम सिंह ने यह भी कहा कि मुझे खुशी है कि वे (भाजपाई) बदल रहे हैं। हालांकि उन्होंने अपनी धर्मनिरपेक्ष, जिसका सीधा अर्थ है मुसलमानों को संरक्षण देना, पर कायम रहने की बात कही और केन्द्र सरकार से सच्चर कमेटी की रिपोर्ट लागू करने पर जोर दिया। श्री मुलायम सिंह ने मुख्यमंत्री रहते हुए अयोध्या में कारसेवकों पर गोली चलवाने को भी उचित बताया क्योंकि उनको विवादित ढांचे की सुरक्षा करनी थी।

❑ विपिन गौड़

सपा और भाजपा के बीच दूरी कम करने के फार्मूले से कई लोग आश्चर्यचकित दिखे। वे जानते हैं कि यह इतनी जल्दी संभव नहीं है। श्री मुलायम सिंह यादव ने इस संदर्भ में एक प्रयोग तब किया था जब अयोध्या कांड के हीरो और पूर्व मुख्यमंत्री कल्याण सिंह से दोस्ती की थी। उस समय भी मुस्लिम समाज चौकन्ना हुआ था और आजम खां जैसे साथी उनसे अलग भी हो गये थे। श्री कल्याण सिंह ने भी ऐसा आभास दिलाया कि जैसे कथित बाबरी मस्जिद को गिरवाकर उन्होंने पाप किया और अब प्रायश्चित करने वाले हैं। बाद में सपा से निकलने और पुनः भाजपा में शामिल होने पर वे पुनः हिन्दूवाद के ध्वजावाहक बन गये हैं। लखनऊ में हिन्दुस्तान समाचार फीचर सेवा (हिफी) के कार्यालय में इसके संस्थापक स्व. अरविन्द मोहन स्वामी की स्मृति में सभागार का लोकार्पण करते हुए वरिष्ठ नेता श्री नारायण दत्त तिवारी ने भी सोच बदलने की जरूरत बतायी। उन्होंने 'देश की वर्तमान दशा और दिशा' पर अपने विचार रखते हुए कहा कि दुनिया भर में जोड़ने की प्रक्रिया चल रही है, तोड़ने की सोच को निकाल बाहर किया जा रहा है। उन्होंने यूरोप का उदाहरण दिया जहां पिछली शताब्दी में दो बड़े युद्ध (विश्व युद्ध) हो चुके हैं। यूरोप के देश एक–दूसरे के दुश्मन थे लेकिन अब उनकी साझा मुद्रा 'यूरो' दुनिया की सबसे मजबूत मुद्रा मानी जाती है। इंग्लैण्ड, जिसका कभी सूरज अस्त नहीं होता था अर्थात् पूरी दुनिया पर जो राज कर रहा था, उसने भी अपनी मुद्रा पौण्ड का अस्तित्व बरकरार रखने के लिये यूरो से समझौता कर रखा है। फ्रांस और जर्मनी विरोध को कब का भूल चुके हैं। यहां तक कि द्वितीय विश्व युद्ध के बाद मित्र राष्ट्रों ने ही जर्मनी के दो टुकड़े करके पश्चिम जर्मनी और पूर्वी जर्मनी बना दिया था। बीच में बर्लिन की दीवार उठा दी गयी थी जिसे दोनों देशों की जनता ने मिलकर तोड़ डाला। सोवियत संघ जब तक एक था, दुनिया की महाशक्ति कहा जाता था लेकिन बिखर गया तो कटोरा लेकर कर्ज मांगने की स्थिति में आ गया।

श्री मुलायम सिंह और श्री राजनाथ सिंह यदि सोच बदलने की बात कह रहे हैं तो यह राजनीति के लिये एक सुनहरे युग की शुरुआत मानी जाएगी। सोच बदलने से राजनीतिक ही नहीं सामाजिक और आर्थिक समस्याएं भी दूर हो सकती हैं। उस समय महिला सुरक्षा कानून बनाने की जरूरत नहीं रहेगी। देश का मध्यम वर्ग आर्थिक तंगी से इसलिए भी गुजर रहा है क्योंकि उसने सादा जीवन उच्च विचार का सिद्धांत ताख पर रख दिया है। विचार ही हमारे आंतरिक व्यक्तित्व की आत्मा होते हैं।

मोदी का वामपंथी अंधविरोध

❑ दिलीप कुमार

बेचौनी और बौखलाहट शब्द के अर्थ अगर आप समझना चाहते है तो दिल्ली विश्वविद्यालय में देश के लोकप्रिय व विकास पुरुष जननेता नरेन्द्र मोदी के प्रसिद्ध भाषण के बाद हताश वामपंथियों के चेहरो को पढ़िए। बेचौनी, इस बात की कि भारत के भावी कर्णधार के प्रति बढ़ते जनसमर्थन से वामपंथियों की अपनी दुकान बंद होने का खतरा उत्पन्न हो गया है। बौखलाहट की वजह, तमाम विरोध प्रदर्शनों के बावजूद कार्यक्रम की रौनकता को अंशभर भी प्रभावित करने में हुई विफलता है। कार्यक्रम का व्यापक प्रसारण और अगले दिन देशभर के अखघ्बारों में छपे समाचार से सबकी छाती पर सांप लोट गई है। मोदी विरोधी 1 अखघ्बार को छोड़कर, सबने प्रचार पाने की आड़ में विरोध के नाटक करने के इनके नापाक मंसूबे पर पानी फेर दिया।

एसआरसीसी कॉलेज में 6 जनवरी को हुए कार्यक्रम में मोदी का डीयू के उस्ताद कॉमरेड अकेले विरोध करने की हिम्मत नहीं जुटा पाते, इसलिए विरोध दर्ज करने के लिए जेएनयू, जामिया सहित दिल्ली के अन्य इलाकों से मोदी विरोधियों, जेहादियो, भाड़े के प्रदर्शनकारी और कुछ बहला फुसलाकर विद्यार्थी लाए गए। सब जुटे। जमकर भड़ास निकाली। कार्यक्रम के दौरान जब इनकी दाल गलती नहीं दिखी तो लगे सुरक्षा व्यवस्था को चुनौती देने। पानी की बौछारे और जबरदस्त लाठियां पड़ी। अंत में, जब लगभग एक घंटे के प्रभावशाली भाषण सुनकर निकले विद्यार्थियों के मुहं से चारो तरफ मोदी की प्रसंशा होते सुनाई दी तो सारे वामपंथी खीजते हुए, अपने घर लौट गए। लेकिन किस्सा यही समाप्त नहीं हुआ बल्कि बुरी तरह अपनी भद पीटने के बाद भी ये नहीं माने और आजकल जेएनयू की स्टाइल में लगातार पर्चे के रूप में मोदी को फासीवादी करार देने, उन्हें हत्यारा बताने, हिन्दू राज्यव्यवस्था को फासीवादी राज्यव्यवस्था की संज्ञा देने और सस्ती लोकप्रियता पाने के लिए मारपीट का झूठा आरोप लगाकर ।ठटच जैसे संगठनों को बदनाम करने पर तुले हुए है।

सुनने में आया है कि गांजा–भांग का नियमित रूप से सेवन करनेवाले दिग्भ्रमित वामपंथियों का यह गिरोह दिल्ली विश्वविद्यालय में मोदी की बढ़ती लोकप्रियता से घबरा कर आनेवाले दिनों में तरह–तरह के बहाने बनाकर विरोध का नाटक जारी रखने वाले है।

दरअसल, वामपंथी गिरोह की यह बेचौनी सब जानते है, समझते है कि आखिर मोदी का इतना जबरदस्त विरोधा वामपंथी क्यों करते है? क्या वजह है कि रात–रातभर जागकर न केवल मोदी विरोधी पर्चे लिखे जाते है, बल्कि अखघ्बारों के माध्यम से दुष्प्रचार फैलाने के लिए लेख भी लिखे जाते है। हर टीवी डिबेट में में मोदी के विरोधी क्यों भाषाई मर्यादा तक भूल जाते है? इस सवाल का जबाब जानने से पहले, यह जरुरी है कि नरेन्द्र मोदी को जाने व उनके विरोध करने के पीछे छुपे मंसूबों को समझे।

नरेन्द्र मोदी गुजरात ही नहीं पूरे विश्व में, विकास की राजनीति को राष्ट्रनीति से जोड़कर, धर्म–जाति–क्षेत्र से परे जनता के हित में काम करने वाले जननेता के तौर पर जाने, पहचाने जाते है। एक दशक से भी अधिक के अपने स्वर्णिम शासनकाल में नरेन्द्र मोदी ने विकास की ऐसी परिभाषा गढ़ डाली है कि पूरा विश्व अनायास उस विकास मॉडल को स्वीकार्य मॉडल मानने लगा है, जिसमे किसान से लेकर नौजवान तक, खेत से लेकर आसमान तक, नदी से लेकर संस्कृति तक समाहित है। आज दुनिया इस बात को मानती है कि "सर्वे भवन्तु सुखिनः सर्वे सन्तु निरामयाः" के मूलमंत्र गुजरात के गली–कूचियों में प्रत्यक्ष दीखता है। स्पष्ट सोच, दृढ इच्छाशक्ति और देश से जुड़े हर मुद्दों पर अपनी बेबाक राय रखने व उसे करने का माद्दा रखने वाले भविष्यद्रष्टा नरेन्द्र मोदी भ्रष्टाचार की तपिश में झुलस रहे देश में गिनेचुने नेताओं में शामिल है, जिनके पास भ्रष्ट होने का तगमा नहीं है। समाज की सेवा में अपना सर्वस्व न्योछावर करने वाले नरेन्द्र मोदी का व्यक्तित्व इतना व्यापक हो गया है कि देश के हर कोने के लोग, न केवल उनकी तारीफ करते है, व्यक्तिगत जीवन में प्रेरणा पाते है, बल्कि उन्हें भावी प्रधानमंत्री के तौर पर भी देखते है। सड़को पर रिक्शा चलाने वाले हो, कॉलेजों में पढनेवाले विद्यार्थी हो या टाटा–बिरला जैसी कंपनियों में काम करने वाले, सब यह विश्वास भी मोदी से रखते है कि उनके नेतृत्व में भारत भ्रष्टाचार, आतंकवाद, क्षेत्रवाद, जातिवाद से मुक्त होकर, सच्चे अर्थ में सुपरपावर बनेगा। बेरोजगारी की मार झेल रहे देश के नौजवानों का यह भरोसा है कि मोदी जनसँख्या को बोझ नहीं मानेगा, बल्कि उसे मानव संसाधन के रूप में विकसित करके भारत को समृद्धि के शिखर पर पहुचायेगा। वोट की लालच में तुष्टिकरण की नीति अपनाने से आहत देशभक्त जनता को यह विश्वास है कि मोदी देश के दुश्मनों की नापाक हरकतों को बार–बार माफ नहीं करेगा, बल्कि उन्हें सबक सिखाएगा। मोदी के हाथों में जब सत्ता होगी तो वह रीढविहीन, अवसरवादी, संकीर्ण सत्ता नहीं होगी बल्कि वह हर फैसला देशहित में करनेवाली एक हिम्मती और दूरदर्शी सरकार होगी। अर्थनीति स्वार्थनीति नही, जननीति पर आधारित होंगे। राजनीति में चापलूसी संस्कृति, भ्रष्ट व स्वार्थी गठजोड़ समाप्त होंगे।

मोदी की यही वो खूबियाँ है जो लोगो को भांति है और युवाओ को सफल भविष्य की आस दिलाती है। लेकिन मोदी की उपरोक्त खूबियों को न तो मोदी के राजनितिक विरोधी बर्दास्त नही कर पा रहे है और न ही देश की मिटटी में पले–बढ़े, इसी धरती के अन्न खाकर बड़े हुए राष्ट्रविरोधी ताकते पचा पा रही है। राजनीतिक तौर पर विरोधा करने वालो के मंसूबे तो साफ समझ में आती है और उससे मोदी अकेले लड़ने में सक्षम है लेकिन देश के लोकतंत्र में यकीन नही रखनेवाले संगठनो का आंख मूंदकर विरोध करना थोड़ा हैरान करने वाला है। वास्तविकता तो यह है कि इन्हें मोदी से काफी डर लगता है। उसे लगता है कि मोदी और अधिक शक्तिशाली हो गया, उसे सत्ता की बागडोर मिल गई तो वह देश के दुश्मनों को बिरयानी खिलाकर नहीं पलेगा। वह भारत विरोधियों को सम्मानित नहीं करेगा। और न ही वह राज्य की सत्ता का सुख भोगते हुए देशविरोधी कार्य करने की किसी को अनुमति देगा।

आज इसी डर से भयभीत नक्सली–माओवादियों के समर्थक छात्र–संगठन परिसरों में सक्रिय होना चाहते है ताकि देश के भोले–भाले युवकों को मोदी विरोधी विचारधारा का विष पिलाकर गुमराह किया जाए। मोदी के नकारात्मक चित्रण करके, हत्यारा बताकर, एक डर पैदा किया जाए। इसमें कोई शक नहीं कि ऐसी गतिविधियाँ वामपंथी संगठन अकेले नही कर रहे है बल्कि इन्हें उन सभी जेहादी संगठनो से भी अप्रत्यक्ष समर्थन मिल रहा है जो मोदी विरोध के नाम पर अपनी दुकान खोलकर बैठे है।

2002 के दंगे निश्चित तौर पर इतिहास के एक काले अध्याय के सामान है। दंगे में हिन्दू मरे, या मुसलमान, मरती है इंसानियत। जो जख्म मिले है, उसे शब्दों के दिलासे देकर नहीं भरे जा सकते। लेकिन उन जख्मो को कुरेदकर, किसी व्यक्ति विशेष को बदनाम करना, किसी भी सूरत में सही नहीं मानी जा सकती। सब जानते है कि जिस गुजरात के दंगो को लेकर आरोपों की गठरी पिछले 10 वर्षों से मोदी के सर पर लादने की कोशिश की जा रही है, उसपर ैप्ज द्वारा सुप्रीम कोर्ट को दी गई रिपोर्ट से यह स्थिति साफ हो गई है कि मोदी की भूमिका दंगो में नहीं थी।

खुद मोदी ने 26 जुलाई, 2012 को उर्दू पत्रकार शहीद सिद्दीकी को दिए इंटरव्यू में यह कहकर अपनी मंशा स्पष्ट कर दी है कि अगर मेरी संलिप्तता है तो यह साबित की जाए, फिर मुझे फांसी पर लटका दिया जाए। अगर नही तो तुरंत दुष्प्रचार तुरंत बंद होना चाहिए। यहाँ तक की मोदी ने गोधरा दंगो में दोषियों को सजा दिलाने का काम किया। जबकि देश में हुए सैंकड़ो दंगो के दोषी आज भी सड़को पर खुलेआम घूमते दिखाई देते है, लेकिन उन दंगो की कोई चर्चा भी नही होती। इसके बाबजूद मोदी का विरोध क्यों हो रहा है, इसे देश को समझने की जरुरत है। समय की मांग है, अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता के नाम पर मोदी के अंधविरोधा का सिलसिला अब बंद होनी चाहिए। सरकार की गलतियों को लेकर विरोधा उचित है। सरकार व नेता की स्वस्थ आलोचना एक हद तक सही है लेकिन लोकतांत्रिक प्रक्रिया से चुने सरकार के मुखिया के संबंध में दुष्प्रचार बंद होना चाहिए, जिसकी लोकप्रियता अपने राज्य की सीमा में कैद न होकर पूरे विश्व में फैली हुई है।

महिला दिवस : कब होगा सार्थक?

8 मार्च, विश्व महिला दिवस, फिर आ गया एक दिन जो है महिलाओं का, महिलाओं के लिए और सिर्फ महिलाओं के नाम, लेकिन क्या औचित्य है इस दिन का? आखिर क्यों बनाया गया इसे सिर्फ नारियों के लिए?

इसलिए न कि इस दिन हम नारियों का सम्मान कर सकें, उनकी महिमा का बखान कर सकें, उन्हें यह एहसास दिला सकें कि कितनी अमूल्य हैं वे जो वंश को बढ़ाती है, एक ममतामयी मां, एक प्यारी बेटी, बहन, सच्ची जीवनसाथी और दो परिवारों के बीच एक सेतु की तरह है।

लेकिन सच तो यह है कि यह दिन सिर्फ हम नारियों के लिए दिल बहलाने का एक खिलौना मात्र है। जिसके सहारे हम आत्मसंतुष्टि कर सकें कि हम भी कुछ हैं। हमारी भी इस समाज में वही अहमियत है जितनी कि एक पुरुष की। हम मान लें की हमारा समाज अब बदल रहा है और यहां औरत और आदमी का एक समान दर्जा है।

अगर ऐसा होता तो आज हम अपनी सुरक्षा के प्रति इतनी डरी–सहमी न रहतीं। निर्भीक होकर अपना जीवन जी सकतीं। महिलाओं के प्रति बढ़ रहे अपराधों ने उनकी सुरक्षा पर एक बड़ा प्रश्न चिह्न लगा दिया है।

कहीं अकेले जाने से पहले हमें दस बार सोचना पड़ता है, हरदम डर बना रहता है कि कब, कहां, कौन–सा भेड़ध्या ताक लगाए बैठा है कि शिकार मिलते ही झुंड सहित उस पर टूट पड़े, और जब शिकारियों के इस झुंड में रक्षक भी भक्षक बनकर शामिल हो जाए तब हम किससे मदद की गुहार लगाएं?

इस घिनौने कुकृत्य में उन अपराधियों का तो कुछ नहीं जाता, जाती है तो बस पीड़ध्ता की इज्जत, और जीवनभर कायम रहती है इस घृणित काम की गहरी काली और तकलीफदेह यादें, जो जीवन भर उसके मन–मस्तिष्क में साये की तरह नाचती रहती है। अगर वह इसे भूलकर जीना भी चाहे तो समाज वाले उसे जीने नहीं देते। क्योंकि ऐसा अपराध चाहे कोई भी करे सहना सिर्फ स्त्री को पड़ता है।

एक स्त्री होते हुए ऐसा कहना वाकई दिल पर पत्थर रखने जैसा है, लेकिन आज के हालातों को देखकर तो यही कहा जा सकता है। मानती हूं कि सारे पुरुष और समाज के सभी लोग ऐसी सोच वाले नहीं होते और वे नारियों को वह सम्मान देते हैं जिनकी वे हकदार हैं, पर जिस तरह एक सड़ी हुई मछली सारे तालाब को गंदा कर डालती है उसी तरह ऐसा घ्कुकृत्य करने वाले पुरुष सारे सभ्य वर्ग के लिए एक कलंक हैं। जिसे मिटाना इन्हीं सभ्य लोगों का कर्तव्य है।

एक तरफ तो देश आधुनिकता में आगे जाता जा रहा है, देश के सबसे ऊंचे पद पर एक महिला ही विराजमान है। आज कोई ऐसा क्षेत्र नहीं बचा जहां महिलाओं ने अपनी छाप न छोड़ी हो लेकिन फिर भी स्त्रियों के प्रति समाज की सोच क्यों संकीर्ण होती जा रही है? सिर्फ नाम के लिए महिला दिवस मना लेना ही काफी नहीं है। सही मायने में महिला दिवस तब सार्थक होगा जब असलियत में महिलाओं को वह सम्मान मिलेगा जिसकी वे हकदार हैं। क्या आप देंगे वह सम्मान नारियों को और बनाएंगे महिला दिवस को सार्थक?

देश में खुलेगा पहला महिला बैंक

नयी दिल्ली : भारत में सरकारी क्षेत्र में पहला महिला बैंक स्थापित किया जायेगा। यह ऐलान वित्त मंत्री पी चिदंबरम ने लोकसभा में किया। चिदंबरम ने 2013–14 का आम बजट पेश करते हुए सार्वजनिक क्षेत्र के बैंक के रुप में भारत के पहले महिला बैंक की स्थापना का प्रस्ताव किया। उन्होंने कहा कि प्रारंभिक पूंजी के रुप में इस बैंक पर 1000 करोड रुपये की आरंभिक पूंजी का प्रावधान किया जाएगा। चिदंबरम ने कहा कि पूंजी निर्माण के लिए बैंकों को 2013–14 में 14 हजार करोड रुपये दिये जाएंगे। उन्होंने कहा कि सार्वजनिक क्षेत्र के बैंकों द्वारा बासिल–3 विनिमयावली का अनुपालन सुनिश्चित किया जाएगा। उन्होंने कहा कि मार्च 2013 की समाप्ति से पहले सार्वजनिक क्षेत्र के 13 बैंकों को 12517 करोड रुपये की अतिरिक्त पूंजी दी जाएगी। चिदंबरम ने वित्त मंत्रालय में विशेषज्ञों की स्थायी परिषद के गठन का प्रस्ताव किया जो भारतीय वित्तीय क्षेत्र की अंतरराष्ट्रीय प्रतिस्पर्धात्मकता का विश्लेषण करे और भारतीय बाजार में

व्यापार करने की लेनदेन की लागतों की समय समय पर जांच करे तथा आवश्यक कार्रवाई के लिए सरकार को जानकारी दे। उन्होंने कहा कि सार्वजनिक क्षेत्र के बैंकों की सभी शाखाओं में 31 मार्च 2014 तक एटीएम सुविधा उपलब्ध करायी जाएगी। 2013–14 में ग्रामीण आवास निधि को 6000 करोड रुपये दिये जाएंगे। राष्ट्रीय आवास बैंक से शहरी आवास निधि की स्थापना के लिए कहा गया है और 2013–14 में इस निधि में 2000 करोड रुपये दिये जाएंगे।

महिला यानी हर मोड़ पर खतरा

महादेवी वर्मा की कविता है– मैं नीर भरी दुरूख की बदली...। लड़कियाँ मानो माटी की गुड़िया हों। हर मोड़ पर टूटने और बिखरने का डर है। हर मोड़ पर परेशानियाँ। पैदा होने पर परेशानी,

पहले ही पता लगा लेते हैं और गर्भ में ही मार दिया जाता है। वहाँ बात नहीं बनी तो 5–6 साल की उम्र में ही सही। पढ़ने से वंचित।

कुछ बड़ी हुई तो बाल–विवाह का डर, वो भी नहीं हुई तो गिद्ध की तरह हर वक्ध्त घूरती नजरों का खौफ। अगर पढ़ने–लिखने गईं तो अवसरों का डर। अवसर मिल गए तो उसे बनाए रखने के लिए 'कीमत' चुकाने का डर। शादी के लिए दहेज का डर। दिया तो भी पति और ससुराल में प्रताड़ना का डर, नहीं दिया तो जलाकर मारने का डर। इससे बचकर निकले तो पति की संपत्ति में हिस्ध्सेदारी का डर। पति न रहा तो बेटे से गुजारे (भत्ता) का डर। तो फिर दुरूख की बदली कहाँ... सागर ठीक होगा।

गर्भ में भी डर

भ्रुण हत्या के मामलों पर गौर करें तो सबसे पहले ये चौकाने वाले हैं। वर्ष 2000 से 2004 तक दर्ज मामले सिर्फ इकाई में हैं, जिससे इस दावे को बल मिलता है कि कानून हर किसी पर चौकस नजर रख सकता है। बनारस, जयपुर जैसे तेजी से व्यापारिक दृष्धटिकोण से उभरती जगहों पर भी कन्ध्या को कोख में मार देने की इबारतें राह चलती दिख जाएँगी। विंध्याचल में तो बाकायदा इस संबंध के पोस्ध्टर देखने को मिल जाएँगे कि गर्भपात मात्र 200 रुपए में। जो बच्चियों को पनपने के पहले रौंदने के लिए हमेशा तैयार रहते हैं।

महादेवी वर्मा की कविता है– मैं नीर भरी दुरूख की बदली...। लड़कियाँ मानो माटी की गुड़िया हों। हर मोड़ पर टूटने और बिखरने का डर है। हर मोड़ पर परेशानियाँ। पैदा होने पर परेशानी, पहले ही पता लगा लेते हैं और गर्भ में ही मार दिया जाता है।

घूरती आँखें

राह चलते जुमले और घूरती आँखें हमेशा पीछा करती हैं। यहाँ पूरे देश की एकजुटता दिखाई देती है। उम्र, वर्ग, रंग, जाति, धर्म ... किसी प्रकार का कोई भेद नहीं दिखाई देता है। 2003–04 में उत्ध्पीड़न के मामले 1477 दर्ज हुए, 2002–03 में 2019, 2002–01 में 827, 2000–01 में 1164 मामले दर्ज हुए। वैसे यह चिंता केवल भारत की नहीं है, पूरे विश्व की है और यूएस में तो इस पर अपने कई कनवेशन भी घोषित किए हैं। 2006 में सभी अपराधों में से 2 फीसदी मामले छेड़खानी के थे।

संगीन साए में

अपराध के दायरे तो बढ़े हैं लेकिन शरीर से संबंधित अपराधों के केंद्र में हमेशा महिला ही रही है और इस आँकडेध में कोई कमी नहीं आई है। कागजी बातों पर गौर करें तो 2003–04 में 190 बलात्ध्कार हुए, 2002–03 में 226, 2001–02 में 138 और 2000–01 में 274 मामले दर्ज हुए। लेकिन अपराधों की सुर्खियों पर नजर डालें तो बलात्ध्कार और बलात्कार के प्रयासों की खबर हर जिले, राज्ध्य में हमेशा नजर आती है। चाहे अखबारों को क्ध्यों न इसे मसालेदार बनाने के लिए ही छापा जाए।

दहेज की कीमत पर सात फेरे

दहेज हत्या के 2003–04 में 362 मामले आए, जो 2002–03 में 443 थे। वहीं यह आँकड़ा 2002–03 में 308 और 2002–01 में 536 था। दूसरी ओर दहेज के लिए सताई जाने वाली महिलाओं की तादाद 902, 1072, 726, 943 रही। शादी के बाद भी उनकी समस्ध्या में कोई कमी नहीं आई। 2003–04 में 143 महिलाएँ या तो छोड़ दी गईं या उनके पति ने दूसरी शादी रचा ली। 2002–03 में यह आँकड़ा बहुत ज्ध्यादा था, इस वर्ष 385 महिलाएँ इस त्रासदी की शिकार हुईं। 2001–02 में 420 मामले सामने आए। 2001– 00 में 188 मामले दर्ज हुए। वहीं 2006 में पति या रिश्ध्तेदार की उत्ध्पीड़न का मामला कुल अपराधों में से 3.4 फीसदी था।

मारपीट और मानसिक वेदना

घरेलू अत्याचार निवारण बिल के बाद भी औरतों के प्रति दोयम व्ध्यवहार में कोई कमी आती नजर नहीं आ रही है। वहीं सरकारी तंत्र भी इसे पूरे ऊर्जा के साथ पारित करने के मूड में नहीं दिख रहा, ताकि इसके प्रभावों के बारे में सकारात्ध्मक संकेत जा सकें। गत कुछ वर्षों में महिलाओं के प्रति शारीरिक प्रताड़ना पर नजर डालें तो 2004–03 में 29, 2003–02 में 43, 2002–01 में 38 और 2000–01 में 142 मामले दर्ज हुए।

काम पर भी सुकून नहीं

कहने को आज महिलाएँ पुरुष के साथ कंधे से कंधा मिलाकर चल रही हैं। उन्हें भी काम के अवसर मिल रहे हैं। लेकिन इसके लिए उन्हें बड़ी कीमत चुकानी पड़ रही है। कार्यस्थल पर महिलाओं को मानसिक और शारीरिक उत्पीड़न का शिकार होना पड़ता है। कार्यस्थल पर उत्पीड़न पर गौर करें तो 2004–03 में 153, 2003–02 में 203, 2002–01 में 165, 2001–00 में 51 मामले उत्पीड़न के दर्ज किए गए।

पुलिस नहीं निरापद

विडंबना यहीं पर खत्म नहीं होती है। कई मामलों में पुलिसिया उत्पीड़न और मामला दर्ज करने में उदासीनता का भी शिकार इन महिलाओं और इनके परिजनों को भी होना पड़ता है। वर्ष 2004–03 में 842, 2003–04 में 874, 2002–01 में 324, 2001–00 में 311 मामले दर्ज हुए। जब दूसरों से संबंधित मामले पुलिस में दर्ज नहीं किए तो अपने आप से सीधे तौर पर संबंधित मामले कितने दर्ज किए होंगे, ये काबिले गौर है।

कैसे हो इस राक्षसी विनाशलीला का अंत?

भारत में आतंकवाद का राक्षस अपनी विनाशलीला जारी रख रहा है. आए दिन उसका खूनी पंजा फैलता है और निरपराध इंसानों की जान ले लेता है. एक लोकतंत्रीय देश के करोड़ों नागरिकों को उन्हीं तत्वों के द्वारा एक बार फिर चुनौती दी जा रही है जो उन्हें शांति, परस्पर सौहार्द्र और विकास की राह पर आगे बढ़ते नहीं देखना चाहते। अभी तक मिले संकेतों के अनुसार आतंकवाद का यह प्रहार भी उसी दुष्चक्र का अंग है जिससे भारत गत कुछ दशकों से जूझ रहा है लेकिन अब इस पर गहरे मंथन की आवश्यकता है कि इसे कैसे थामा जाए।

हर बार भारत ऐसे हमले होते ही उससे लड़ने और दोषियों को दंड देने की घोषणा करता है, घटना की छानबीन शुरू होने से पहले राजनीतिक बयानबाजी तुरंत शुरू हो जाती है। संसद के अन्दर और बाहर सरकारी पक्ष और विपक्ष के बीच शाब्दिक ले दे होती है। समाचार माध्यम गरमाता है। छोटे परदे पर अनेक बहसें छिड़ती हैं। समस्या के भिन्न पहलुओं पर हर बार एक जैसी चर्चा होती है लेकिन क्या इस सबका कोई ठोस नतीजा निकलता है? कडुआ सच यह है कि सार्वजनिक बहसों के बावजूद काबू में नहीं आ रहा यह विध्वंस विनाश? इसलिए नहीं कि भारत इस आतंकवाद को रोकने में सक्षम नहीं है, पर इसलिए कि सक्षम होते हुए भी वह अमरीका और अन्य पश्चिमी देशों की तरह कठोर कदम उठाने का साहस नहीं दिखा पाया। आतंकवादी घटनाओं के घटने से पूर्व उन्हें रोकने के लिए प्रभावी कदम भी उठते प्रतीत क्यों नहीं होते? बाद में भी यही सब क्यों होता है कि घटनाएं घटने पर शोर मचता है, हलचल होती है, सूत्र भी खोज लिए जाते हैं लेकिन बाहरी और अंदरूनी दबाव बढ़ने लगते हैं और सरकार अपनी गति को धीमा कर देती है. आतंकवाद नहीं थमता। थमते हैं तो आतंकवाद से निर्णायक लड़ाई लड़ने के प्रयास।

हर बार जुटाए गए प्रमाण एक ही आतंक स्रोत की ओर अंगुली निर्देश करते हैं. वह है वैश्विक आतंकवाद का केन्द्र स्रोत बन चुका भारत का पड़ोसी देश पाकिस्तान। वहां से ही मजहबी कट्टरपंथ की लहर निर्बाध बह रही है. इसकी लपेट में वह स्वयं भी आता दिखाई देने लगा है। २१ फरवरी २०१३ के दिन हैदराबाद का दिलसुख नगर दो धमाकों की गूंज से कांप उठा तो घूमघुमा कर यही सब सामने आ रहा है. इसमें भी इंडियन मुजाहिद्दीन का हाथ होने की बात कही गयी. आतंकवादियों के द्वारा १६ निरपराध लोग मौत के मुंह में धकेल दिए गए. १०० से अधिक घायल हुए। धमाकों की घटनाओं के बाद हताहतों के परिवार परिजनों में हाहाकार मचा था. लेकिन निस्संदेह कहीं अपने सुरक्षित ठिकानों पर बैठे आतंकी राक्षस मानवता पर कहर ढाने वाली अपनी आतंकवादी योजनाओं की सफलता का जश्न मना रहे थे. क्या देखते हैं वे कि लोकतंत्र कैसे तड़पता है और उसमें कैसे उभरती है बहसें? जब तक बहसें चलतीं हैं ये दानवतावादी अपने अगले लक्ष्य की तैयारी में जुटने लगते हैं। पर्दे के पीछे क्या चलता है उस सब पर कितनी कड़ी नजर है भारत की? आखिर कब तक चलता रहेगा ऐसा कि प्रायः सतर्कता की चेतावनियाँ इन दुर्भाग्यपूर्ण हत्याओं के बाद जारी होती हैं हत्याकांडों को रोकने के लिए पहले नहीं? कब और कौन कुछ ऐसा करेगा कि इस बेकाबू होते और सतत विस्तार पाते राक्षसी आतंकवाद से उस जनसामान्य को राहत मिले जिसके पास इनसे अपनी सुरक्षा के कोई साधन नहीं हैं. जनता की सुरक्षा का भार सरकार पर है और उसका सतत सावधान होना जरुरी है।

'क्या इस दुर्भाग्यपूर्ण हमले के सम्बन्ध में भारत सरकार को उसके खुफिया सूत्रों से कोई पूर्व जानकारी थी?' यह पूछे जाने पर देश के गृहमंत्री श्री शिंदे ने बयान दिया कि 'इन घटनाओं से दो दिन पहले उन्होंने देश के पांच नगरों में आतंकवादी हमले की सम्भावना के सम्बन्ध में सम्बंधित राज्य सरकारों को जानकारी भेज दी थी'। तदनुसार क्या आंध्रप्रदेश की राज्य सरकार ने घटना को रोकने के लिए तुरंत समुचित कदम उठाए? स्थानीय अधिकारियों के अनुसार उन्हें हैदराबाद में संभावित इन हमलों के सम्बन्ध में विशिष्ट चेतावनी नहीं दी गई थी। तो जीवन मरण से जुड़े ऐसे महत्वपूर्ण मामले में केन्द्र और राज्य सरकारों के बीच तालमेल में कहाँ कितनी कमी है इसका अंदाज इससे स्वतः हो जाता है. इस अभाव की की पूर्ति की दिशा में ध्यान दिए जाने की आवश्यकता है।

इसमें भूल और कोताही की कोई गुंजायश नहीं है कि आज समूचे लोकतंत्रवादी विश्व का सामना अन्तराष्ट्रीय स्तर पर एक ऐसे कट्टरपंथी जिहादी आतंकवाद से है जिसके प्रणेता स्वयं इसे इस्लाम से जोड़ने का दावा करने से नहीं चूकते। इस पर भी भारत समेत विश्व के अनेक सतर्क देश यह दलील देकर कि 'आतंकवाद को धर्म के साथ नहीं जोड़ा जा सकता' इस कट्टरपंथी मजहबी आतंकवाद की तेज धार को कुंद करने की चेष्ठा में हैं। विशेष रूप से इसलिए कि उनके अपने अपने संवेदनशील बहुसांस्कृतिक समाजों में कठिनाई से कायम समरसता को आंच न आए। लेकिन इस सच्चाई से पार नहीं पाया जा सकता कि अल कायदा और उसके साथ जुड़े और अभी भी सक्रिय कट्टरपंथी संगठनों की सोच इसके ठीक विपरीत दिशा में मुहिम चलाए हुए है। ये संगठन घोषित रूप से इस्लाम के नाम पर आतंकवाद का कहर फैलाने में जुटे हैं. उनका उद्देश्य है संस्कृतियों के बीच संघर्ष को बढ़ावा देते हुए एकमात्र अपना वर्चस्व सिद्ध करना। ओसामा बिन लादेन का यही सन्देश उसकी मृत्यु के बाद भी नवोदित आतंकवादियों का आकर्षण बनता है। वे इस तरह की सोच के पुष्ट होने के साथ वैश्विक आतंकवाद का प्रेरणा–प्रशिक्षण केन्द्र बन चुके पाकिस्तान जा कर प्रशिक्षण पाते हैं. आए दिन ब्रिटेन और अमरीका में जन्में पले युवाओं के द्वारा ऐसे आतंकवादी बनने और इन देशों में हमलों की योजनाएं बनाते पकड़े जाने के किस्से सामने आते हैं।

आजादी के बाद का इतिहास साक्षी है कि भारत पाकिस्तान प्रायोजित आतंकवाद का सबसे निकटस्थ पहला निशाना रहा है। १९४७ में मजहबी आधार पर हुए विभाजन के बाद से भारत इस भूल का दंड भुगत रहा है। पाकिस्तान एक मुस्लिम देश बना और उसने मजहबी आधार पर कश्मीर को भी हथियाने के लिए अपने अस्तित्व की पहली सांस में ही भारत विरोध का बिगुल बजा दिया। उसकी तद्विषयक षड्यंत्र रचना बरकरार ही नहीं है बल्कि विस्तार पा चुकी है। सीमा पार से घुसपैठ और भारत के अन्दर अराजकता उत्पन्न करने के लिए

राष्ट्रविरोधी गतिविधियों को उसके द्वारा हवा देना जारी है। किसी से छुपा नहीं है कि भारत में पाकिस्तानी खुफिया एजेंसी आई. एस. आई. के एजेंटों का बड़ा जाल बिछा है। उनके द्वारा आर्थिक प्रलोभन दे कर ऐसे लोगों के साथ संपर्क साधा जाता है जो उनकी आतंकवादी योजनाओं का मुखास्त्र बन कर भारत को संत्रस्त करने के लिए नरसंहारक हिंसा में लिप्त होते हैं। आतंकवादी संगठन इंडियन मुजाहिद्दीन भी आई. एस. आई. की ही रचना है जिसके तार लश्कर–इ–ताएबा से जुड़े हैं. हैदराबाद में हुईं इन नवीन घटनाओं की षड्यंत्र रचना में इन्हीं का हाथ होने की आशंका व्यक्त की गई है।

इन धमाकों से पहले और तुरंत बाद जिस तरह की राजनीतिक हलचल दिखाई दी उसके कुछ पहलुओं पर ध्यान दिया जाना उपयुक्त होगा। हैदराबाद के स्थानीय विधायक के द्वारा हाल ही में दिए गए एक अत्यन्त भड़काऊ भाषण के बाद से हैदराबाद का वातावरण संवेदनशील बना है। ऐसे में बम विस्फोटों की इन घटनाओं का होना स्थिति को और मुश्किल बना सकता था। विस्फोटों के तुरंत बाद पुलिस के द्वारा जांच पड़ताल की आवश्यक कार्यवाही शुरू लिए जाने का महत्व होता है। उसके द्वारा की जाने वाली पूछताछ का यह अर्थ लेकर मीडिया में यह शोर मचाना कि अमुक समुदाय के लोगों को बेवजह परेशान किया जा रहा है वस्तुतः किसी के लिए भी हितकारी नहीं हो सकता। यदि पुलिस के द्वारा भूल होती है और समय रहते वह उसमें सुधार कर लेती है तो इसे पर्याप्त मान कर उसके साथ सहयोग को प्रोत्साहन देना ही हितकर है। यह भी महत्वपूर्ण है कि प्रधानमंत्री समेत जनप्रतिनिधि नेता जनता का मनोबल बढाने के लिए घटनास्थल पर पहुंचे, घायलों से मिले और संतप्त परिवारों को सांत्वना दी, शांति बनाए रखने का अनुरोध किया।

पुलिस और सम्बंधित सुरक्षा एजेंसियों के द्वारा जांच जारी है और अंततः तथ्यों पर आधारित क्या निष्कर्ष प्रस्तुत किए जाते हैं इसकी प्रतीक्षा देश को है. लेकिन इससे भी अधिक उत्सुक प्रतीक्षा देशवासियों और विदेशवासी भारतीयों को यह है कि इस सर्व–विनाशक आतंकवाद के बढ़ते कदमों को किस तरह काटने का संकल्प भारत अब और कितनी मजबूती के साथ प्रदर्शित करता है। इस लड़ाई में सफलता तभी संभव है यदि सामान्य जनता स्वयं यह अहम भूमिका निभाए कि यदि किसी को अपने आस पड़ोस में किसी संदिग्ध गतिविधि की भनक मिले तो प्रशासन को सूचित करे। इसमें कोई शंका नहीं कि बिना अंदरूनी सहायता के बाहर से प्रायोजित आतंकवाद भारत में इतनी आसानी से कारगर नहीं हो सकता।

अपने इस भारत राष्ट्र, सह–राष्ट्रियों और राष्ट्रीय संपत्ति की रक्षा को ही एकमात्र धर्म मान कर, मजहब की दलीलों और दहलीजों को लांघते हुए राष्ट्रहित सर्वोपरि के मूलमंत्र के साथ एकजुट हो कदम उठा कर ही आतंकवाद के इस मानवताविरोधी नरसंहारक राक्षस से लोहा लिया जा सकता है।

साभार : नरेश भारतीय

श्रमिकों की आस

रजेश शर्मा (जयगांव से)

अरसे से भूटान में कार्यरत भारतीय श्रमिक–कर्मचारियों से पक्षपात के आरोप लगते रहे हैं। भारत के साथ दोस्ताना संबंध होने के बावजूद इस तरह की घटना को खुद वहां की सरकार भी दुर्भाग्यजनक मानती है। हाल ही में राजधानी थिम्फू पहुंचे आठ श्रमिकों के एक दल के साथ स्थानीय कुछ लोगों ने भारतीयों के पहनावे पर कटाक्ष करने के अलावा यह कहा कि वहां काम करने के लिए स्थानीय नागरिक सक्षम हैं। फिर ये लोग भारत से वहां क्यों गए हैं। साथ ही इन श्रमिकों को वापस चले जाने के लिए कहा गया। यह भी आरोप है कि इन पांचों में से मुस्लिम श्रमिकों को कई जगह टोपी उतारने के लिए कहा गया। इस संबंध में भूटान के गृह मंत्री मिंजुर दोर्जी ने कहा है कि यदि ऐसा हुआ है तो यह कतई उचित नहीं है। इससे हम दोनों पड़ोसी एवं मित्रवत राष्ट्रों के बीच गलतफहमी पैदा होगी जो यहां की सरकार नहीं चाहती है। जांच में यदि यहां का कोई नागरिक दोषी पाया जाता है तो प्रशासन संबंधित व्यक्ति या अधिकारी के खिलाफ सख्त कार्रवाई करेगी।

जानकारी अनुसार उत्तर प्रदेश के बिजनौर जिले के अलाउद्दीनपुर निवासी ये आठों कामगार बीते तीन जनवरी को भूटान में सड़क निर्माण के लिए चले थे। मोहम्मद सुलेमान, मो. जहीर आलम, मो. अकबर, मो. कलमल, मोहम्मद सुजाउद्दीन, अशोक कुमार, महेश कुमार और नीरज कुमार मेरठ जिले के रुआसा गांव निवासी प्रताप राणा के कहने पर भूटान गए थे। भारत भूटान सीमावर्ती शहर जयगांव में बातचीत में एक पीड़ित मोहम्मद अल्ताफ ने बताया कि उनकी टीम के श्रमिकों को प्रति किलोमीटर इंटरनेट केबल लगाने के लिए ठेका के बतौर आठ हजार रुपए देना तय हुआ था। छह जनवरी को ये लोग जयगांव पहुंचे। फिर निकटवर्ती फुंछोलिंग शहर में स्थित इमिग्रेशन विभाग से आठ

रोज बाद काम का परमिट लेकर अगले रोज राजधानी थिम्फू के लिए रवाना हुए। परमिट के अनुसार इन श्रमिकों को भूटान आस टेक्नोलाजिस की तरफ से इंटरनेट का केबल लगाना था। इन्हें मोंगर में काम की जिम्मेदारी सौंपी गई थी। लेकिन काम बंदी के चलते इन्हें 15 जनवरी को थिम्फू पहुंचाया गया। आरोप है कि जैसे ही इन लोगों ने भूटान के प्रशासनिक क्षेत्र में कदम रखा वैसे ही वहां के प्रशासनिक व पुलिस अधिकारियों ने इनके साथ दुर्व्यवहार करना शुरू किया। कई जगह इन्हें इनकी धार्मिक टोपी उतारने के लिए कहा गया। मजहब में इसका निषेध बताने पर अधिकारियों ने इनसे गाली गलौज भी की। लेकिन इस अपमानजनक व्यवहार के बावजूद ये लोग अपने काम में जुटे रहे। ये लोग जब राजधानी थिम्फू पहुंचे तो वहां के कई स्थानीय नागरिकों ने अपमानजनक बात कहते हुए बोला कि भूटान में ये लोग क्यों काम करने गए हैं। 'तुम लोग यहां से अपने देश चले जाओ। यहां भूटानी लोगों को ही काम का अधिकार है'। इस बीच कंपनी के एजेंट का पांच रोज तक कहीं अता पता नहीं मिला। किसी तरह अपना गुजारा किया और फिर 20 जनवरी को काम छोड़कर वापस भारत लौटे।

इस संबंध में एजेंट प्रताप राणा ने दूरभाष से बताया कि श्रमिकों को असम होकर मोंगर ले जाने की बात थी। लेकिन बंदी के चलते उन्हें थिम्फू पहुंचाया गया। उन्हें इस बात पर हैरानी है कि ये लोग उन्हें बिना बताए वापस लौट गए।

Indian Film Industry Has Done Well Despite of Not Much Government

"The numbers of films have gone up, and the quality is as good as international, Indian Film Industry has done extremely well even without much government support" said Uday K. Varma IAS Secretary Ministry of Information and Broadcasting Government of India at the inauguration of International Festival of Short Films designed by PHD Chamber of Commerce and Marwah Studios in association with Directorate of Film Festival at New Delhi.

"We are now the biggest film industry of the World and business wise we have yet to grow to tap more national and international market" said Alok B. Shriram vice President of PHD introducing the subject to the large audience including film, television and media persons from different countries of the World.

Today with digitalization it is now easy to make the film but difficult to sell & market the film. Films are the Ambassador of culture of any country and Festivals are the best showcase to project them. In series of 9 festivals we have introduced for the nation this is now the 10th in the row" added Sandeep Marwah President of Marwah studios and Chairperson of Entertainment & Media Committee of PHD.

Nine short films were screened from China, Lithuania, Greece, Poland, Spain, Philippines, Vietnam, Slovenia and India. R.K Singh Director ASMS , Vipin Gaur General Secretary (NAI) And many famous personalities remain part of the program The program was conducted by Yogesh Srivastava Secretary PHD and Susma Shekhar Secretary General Paid vote of thanks.

First Global Festival of Journalism Noida 2013 Inaugurated

"To do something different for the country, for the masses should be the definition of Journalism, genuineness should be the language and sincerity should be the presentation" said Dr. G.V.G. Krishnamurthy former Chief Election Commissioner of India who started his carrier as journalist many years back.

We have forgotten the authenticity of journalism, only good schools like Asian School of Media Studies can save the grace of real principles of journalism" said Lalit Bhasin Chairperson of the Film Certification Appellate Tribunal, Ministry of Information and Broad casting, Government of India.

I extend my heartiest congratulations to Sandeep Marwah and his complete team for declaring International Day of Journalism on 12th February and followed by first time Global Festival of Journalism. Today we all are part of the making of history" said Dr. Aziz Burney Group Editor of Sahara.

"Never ever this happened in my 40 years of my carrier, a festival of journalism. We are feeling pride to be part of GFJN" said Alok Mehta former President Editors Guild & Editor Nayayi Duniya and V. Tripathi Director of UNI also spoke on the occasion.

Mr. Vipin Gaur Gen- Secretary (NAI) said that it is good luck of India again India is Declared International day of Journalism on 12 February , which will be built in the world for the next time

Later Sandeep Marwah presented the life membership of newly constituted International Journalism Centre to all the guests.

International Journalism Centre Inaugurated At GFJN 2013

IJC-International Journalism Centre specially planned to promote journalistic activities has been constituted by Marwah Studios for the media persons in this part of the World.

"We are hoping that International Journalism Centre will work for the benefit of media persons and will guide old and new journalists towards better and motivated path" said Dr. G.V.Krishnamurthy former Election Commissioner of India while releasing the first poster of Journalism Centre.

Present on the occasion senior journalist Dr. Aziz Burney Group Editor Sahara, Vinod Mehta former President Editors Guild India, Lalit Bhasin of Ministry of Information and Broadcasting and Director UNI V. Tripathi appreciated the efforts of Marwah Studios to initiate the step of establishing Centre.

"The centre has been inaugurated on the International Day of Journalism- 12th February and on the first day GFJN 2013. I assure you it will continue for ever" said Sandeep Marwah President of Marwah Studios.

Valentines Day Part 0f Global Festival of Journalism Noida 2013

Three days grand Global Festival of Journalism Noida 2013 came to an end with the presentation of Awards followed by a high powered entertainment program designed & choreographed by the students of Asian School of Media Studies, Asian School of Communication and Asian Academy of Film And Television.

The entertainment programs indicating love and affection actually molded to present Valentines Day, the third day of the festival. A colorful musical dance drama, mimes with social themes, fashion show with ethnic Indian clothes were good enough to celebrate Valentines Day.

Mr Vipin Gaur gen- Secretary (NAI) said that today is the day of love and Basant Panchami is also . We got lucky on the 12th of February we launched the Global Festival of journalism and Journalists today, 14 February, all of us together are the colors in the color of love and happiness.

"I wish you a very happy Valentines Day and wish lots of love for the society and country" said Sandeep Marwah President of the festival in the closing words.

Global Journalism Awards Constituted At GFJN 2013

Global Festival of Journalism Noida 2013 constituted Global Journalism Awards under the chairmanship of Sandeep Marwah with some prominent people of the media and society.

"It was decided to encourage and appreciate some of the journalist who have done extremely well in last years on this occasion of International Day of Journalism and formation of first ever Global Festival of Journalism in Asia" said Sandeep Marwah President of the Festival.

Vinod Sharma of Times of India Group, Sudhir Talang Cartoonist, R.P.Raghuvanshi of Chetna Manch, Kumar Rakesh Sr Journalist , Parimal Kumar Correspondent NDTV , Sanjeev Chauhan Sr Journalist , Vipin Gaur Gen- Secretary Newspaper Association of India, V.S.Kanan of Asian Academy of Film And Television, Nitin Saxena of Asian School of Communication and Dr. Kapoor of Asian School of Media Studies, Sunil Parashar PR Agency, were among the best journalist of this year.

समाज में शिक्षक का स्तर ऊपर क्यों नहीं उठ रहा है

बैसिल जोसेफ

पिछले 50 वर्षो से हम 5 सितंबर को शिक्षक दिवस मनाते आ रहे हैं। ये सिलसिला साल 1962 में शुरू हुआ था, जब सर्वपल्ली राधाकृष्णन भारतीय गणराज्य के दूसरे राष्ट्रपति बने थे। इस दिन स्कूलों में गुरु महिमा के गाने गये जाते हैं उनका सम्मान किया जाता है, राष्ट्रपति भी कुछ शिक्षको को पुरस्कार देकर भारत सरकार की तरफ से अपना फर्ज निभा लेते हैं।

स्टेटस के लिहाज से शिक्षक का दर्जा आज काफी छोटा हो गया हैं। एक सर्वेक्षण रिपोर्ट में युवतियो से पूछा गया की वो किस प्रोफेशन वाले व्यक्ति को अपना जीवन साथी बनाना पसंद करेंगी । इसके उत्तर में 40 प्रतिशत ने कहा बिज्नेसमॅन 20 प्रतिशत ने डॉक्टर, इंजिनियर या चार्टर्ड अकाउंटेंट को अपनी पसंद बनाया । शेष 40 प्रतिशत ने आईएस, आईपीएस या एमएनसी में कार्यरत किसी को अपना जीवन साथी बनाना चाहेंगी, मगर किसी ने अध्यापक से विवाह करने की इच्छा जाहिर नही की । शिक्षको की कई शिकायते हैं कि जिम्मेदारी और काम के हिसाब से उनका वेतन बहुत कम है, समाज के मूल्य बदल गये हैं । जिस प्रकार पहले गुरु का सम्मान होता था वो अब नही रहा, पेरेंट्स स्कूल आते हैं और अपने बच्चे की टीचर से व्यापारी की तरह बर्ताव करते हैं। हमने फीस दी है, तुमको सेलरी मिली, अपना काम ठीक से करो। टीचर किसी विद्यार्थी को पढ़ाने उसके घर जाता है तो अभिभावको के बोलने का लहजा इस प्रकार होता है की चल तेरा टयुटर आ गया, जब घर में ये वातावरण होगा तो बच्चा क्यों शिक्षक का सम्मान करेगा।

हमारे देश में शिक्षक दिवस को एक ओपचारिकता बना दिया गया है। क्या भारतीय समाज शिक्षको को अब उतना सम्मान देता है जितना किसी डॉक्टर, इंजीनियर, वकील, या बैंक अधिकारी को दिया जाता है। आज हमारा देश शिक्षा के हिसाब से दुनिया के चुने हुए देशो में से एक है यहाँ शिक्षा का स्तर ऊँचा है लेकिन शिक्षकों का स्तर बहुत नीचा बना दिया गया है, क्या हमारे राष्ट्रीय व प्रादेशिक शिक्षक संघ शिक्षको की उदासीनता के लिए उत्तरदायी नहीं हैं।

आज सरकारी स्कूलो में पढ़ाई के नाम पर कुछ नही रह गया क्योंकि वहाँ अनुशासन नही रह गया, हाँ लेकिन शिक्षक का वेतन में जरूर वृद्धि हुई है। सरकारी स्कूल के शिक्षक को वेतन तो चाहिए 6 वें वेतन आयोग का मतलब 40 हजार महीना इसके बावजूद ना तो अपना कार्य ठीक से करना ना उपस्थित रहना और कामचोरी करना । इसलिए भगवान ने इनकी कामचोरी का रास्ता निकाल लिया है, कभी इनकी डियूटी चुनाव में तो कभी जनगणना में लगा दी जाती है। तभी आजकल अभिभावक अपने बच्चो को पब्लिक स्कूलो में दाखिला दिलाते हैं ताकि उनके बच्चो को अनुशासन सिखाया जाए और हर तरीके से उन्हे प्रोत्साहित किया जाए पढ़ाई में।

पब्लिक स्कूलों में शिक्षक अपनी योग्यता को पूर्ण रूप से दिखाते हैं काम ज्यादा होने के बावजूद बच्चों का आत्मविश्वास बढ़ाना आक्टिविटीस में बच्चो को आगे लाना ये शिक्षक के कार्यों में शामिल होता है, लेकिन सरकार का ध्यान पब्लिक स्कूलों की तरफ कम और सरकारी स्कूलों की तरफ ज्यादा है। सरकार को भी पब्लिक स्कूलों के शिक्षकों को सरकारी स्कूल के शिक्षकों जैसा लाभ देना चाहिए।

कुछ खामियाँ पब्लिक स्कूलों में भी हैं जहाँ शिक्षकों को पूरा वेतन नही मिलता, यहाँ हस्ताक्षर ज्यादा रकम पर करवाया जाता है और वेतन कम दिया जाता है, शिक्षक के ऐतराज करने पर स्कूल से निकाल देने की धमकी दी जाती है शिक्षक को नौकरी बचाने के लिए चुप रहना पड़ता है। ये आजकल ज्यादातर पब्लिक स्कूलों में हो रहा है ,क्योकि इनके ऊपर किसी का नियंत्रण नही है मनमर्जी करते हैं विद्यार्थी से फीस ज्यादा ली जाती है और शिक्षकों का वेतन ज्यों का त्यों, सरकार को चाहिए वो इसमे हस्तक्षेप करे जिससे शिक्षकों को लाभ मिले। एक अच्छा शिक्षक ही बच्चो को अच्छा इंसान बना सकता है जो आगे चलकर देश का गौरव बनते हैं।

Publishing on 10th of every month
RNI No. 62500/95
REGD. No. DL (E)-01/5149/2012-2014
LICENCE TO POST WITHOUT
PRE-PAYMENT No. U(C)223/12-14

To,

If undelivered, Please return to:
न्यूज़ पेपर्स एसोसिएशन
ऑफ इण्डिया
POST BOX 9235, NEW DELHI-110 092

यदि आप लेख, रचना, समाचार, विचार प्रेषित करना चाहते हैं तो आप अपने अप्रकाशित लेख निम्न पते पर भेजें।

आपको *NAI* का यह अंक कैसा लगा, इस बारे में अपने सुझाव हमें निम्न पते पर भेजें।

एन. ए. आई.
A-115, Vakil Chambers, Top Floor,
Shakarpur, Delhi-110092, Ph.: 011-22058133

Editorial Board

Founder	Late Dr. M. R. Gaur
Editor Publisher-Printer	Vipin Gaur
Counsultant Editor:	Dr. Smita Mishra
Managing Editor:	Dilip Kumar
Legal Advisors:	Nikhat Anjum Malik
Advocate Delhi Highcourt	Rajesh Sharma
	Adv. P. Yadav
Office Secretary	Kavita Bamotra

- Bureau Chief -

Guwahati:	Runu Hazarika
Mumbai:	Mr. Dinesh K. Mishra
Bangalore:	Mr. M. K. Jain
Jaipur :	Mr. Banwar Singh Ranawat
Chennai:	Mr. P.C.R. Suresh
M.P. & C.G.	Mr. O. P. Jain
Kerela	Mr. Suvarna Kumar
Goa	Dr. Vivek Gaitonde

Sushil Kumar Pandeyy
9958561832, 9213796552
MONEY MANAGERS
CONSULTANT- TAX MATTER, RETAIL ASSETS, WORKING CAPITAL
PAN CARD, ITR, BOOK, KEEPING, SALES TAX, PF, ESI, FACTORY ACT.
CMA Data, Cash Credit/Over Draft/WCDL/LAP. PL, DOD Limit, Housing Loan, Vehicle Loan insurance & Investment solution
Office:- A-115, Vakil Chamber, Top Floor, Shakarpur Delhi-92
Resi- D-17, Ganesh puri, Sahibabad, Ghaziabad (U.P.)

SNIPER™ SECURITAS
• *Security Guards (Armed/Unarmed)*
• *Personal Security Officers*
• *Security Equipments*
• *Facility & allied services*
Contact :
Mr. Rajesh Singh M. 9582928707

A-115, Top Floor, Vakil Chamber, Shakarpur Delhi-92, Ph. 011-32219061
Email : info@snipersecuritas.com

Printed, Published by Vipin Gaur on behalf of News papers Association of India, Printed at Mayank Offset Process 794/95 Guru Ramdas Nagar Ext. Laxmi Nagar Delhi-92 and Published from J-51, DLF Dilshad Delhi-95, Editor: Gayatri Gaur. All disputes settled in Delhi Court only.